



वैश्विक हिंदी पत्रिका

(वैश्विक हिंदी परिवार का मासिक)

वर्ष 1-अंक 8

अगस्त, 2024

इस अंक में

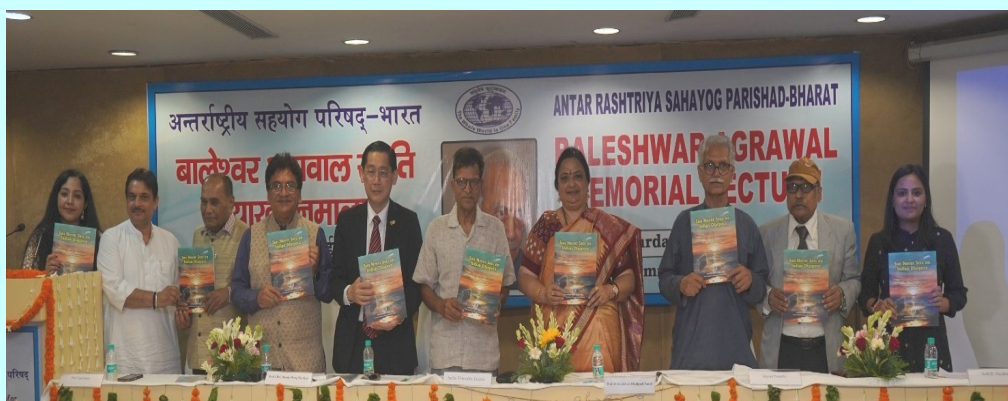
- मुख्य गतिविधियाँ - पृष्ठ 1
- संपादकीय - पृष्ठ 2
- अग्रलेख - पृष्ठ 2
- वैश्विक हिंदी परिवार कार्यक्रम: पृष्ठ 3
- वातायन कार्यक्रम : पृष्ठ 4
- विश्व परिक्रमा- पृष्ठ : 5 एवं 6
- पुस्तक समीक्षा-कविता : पृष्ठ 7
- साक्षात्कार - पृष्ठ 8

आगामी अंक में

- अच्छी हिंदी : विविध आयाम- 08.09.2024

अंतरराष्ट्रीय बालेश्वर अग्रवाल स्मृति व्याख्यानमाला

अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद (एआरएसपी) ने शनिवार, 20 जुलाई, 2024 को नई दिल्ली स्थित मालवीय स्मृति भवन में चौथा बालेश्वर अग्रवाल स्मृति व्याख्यान आयोजित किया। यह व्याख्यान न केवल उन्हें याद करने के लिए था, बल्कि उनके काम को जारी रखने के लिए एक प्रेरणा और विचारोत्तेजक चर्चा के रूप में भी काम आया। व्याख्यानमाला में दो सत्र रखे गए थे। अंग्रेजी में आयोजित पहला सत्र 'प्रवास से राष्ट्रीयता तक : मलेशिया में भारतीय और चीनी प्रवासी' विषय पर केंद्रित था, जबकि दूसरा सत्र 'हिंदी पत्रकारिता : अवसर और चुनौतियाँ' पर था। इसके अतिरिक्त, कार्यक्रम के दौरान 'सन नेवर सेट ऑन इंडियन डायस्पोरा' शीर्षक से 24 घंटे का सम्मेलन कार्यवाही प्रकाशन औपचारिक रूप से जारी किया गया।



पहले सत्र में मलेशिया से मुख्य वक्ता प्रोफेसर डैनी वॉंग त्जे केन ने अपने व्याख्यान में मलेशिया में चीनी और भारतीय आबादी पर तुलनात्मक ढंग से ध्यान केंद्रित करते हुए प्रवासी समुदायों की पहचान और अनुभवों की खोज करते हुए अपनी बात रखी। उन्होंने प्रवासी की अवधारणा पर प्रकाश डालते हुए, अपने पूर्वजों की मातृभूमि में लौटने की लालसा को रेखांकित किया,

जो यहूदी अभिव्यक्ति 'अगले साल यरूशलेम में मिलते हैं' के समान है।

कार्यक्रम का दूसरा सत्र 'हिंदी पत्रकारिता : अवसर और चुनौतियाँ' विषय पर था। यह सत्र बहुत ही रोचक और ज्ञानवर्धक रहा। सत्र के अध्यक्ष अशोक जी टंडन, मुख्य अतिथि डॉ सच्चिदानंद जोशी और बीज वक्ता श्री आलोक मेहता थे। सभी वक्ताओं ने बेबाकी से अपनी बात कही। हिंदी पत्रकारिता के अवसरों और चुनौतियों पर गहन विचार-विमर्श हुआ। सत्र के दौरान वक्ताओं ने

पत्रकारिता के विभिन्न आयामों पर चर्चा की, जिसमें ग्रामीण पत्रकारिता, सोशल मीडिया की भूमिका, पत्रकारिता के सिद्धांत, और हिंदी पत्रकारिता

की मौजूदा स्थिति पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया गया। यह सत्र पत्रकारिता के छात्रों, पेशेवरों और आम जनों के लिए अत्यंत शिक्षाप्रद और प्रेरणादायक रहा।

इस कार्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र गुप्ता, महासचिव श्री श्याम परांडे, मानद निदेशक श्री नारायण कुमार जी, सचिव गोपाल अरोड़ा, एम्बेसडर दयाकर जी और वैश्विक हिंदी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

राष्ट्रीय हिंदी विज्ञान सम्मेलन

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद-प्रगत पदार्थ तथा प्रक्रम अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-एएमपीआरआई), भोपाल ने विज्ञान भारती मध्य भारत प्रांत, मध्य प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, भोपाल, मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल; सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-एनआईएससीपीआर), नई दिल्ली और अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल के सहयोग से पिछले वर्षों की परंपरा को जारी रखते हुए "राष्ट्रीय हिंदी विज्ञान सम्मेलन 2024" का आयोजन किया। यह सम्मेलन का चौथा संस्करण था, जो 30-31 जुलाई को आयोजित किया गया। सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य शोधकर्ताओं को हिंदी में अपने काम को प्रस्तुत करने और चर्चा करने के लिए एक मंच प्रदान करना था, जिससे इस भाषा के माध्यम से विज्ञान और प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाने में बढ़ावा मिले। इस कार्यक्रम का उद्घाटन मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने किया, जिन्होंने भाषा में ज्ञान और विज्ञान को आगे बढ़ाने के महत्व पर जोर दिया। डॉ. यादव ने कहा, "हम अपनी भाषा में ज्ञान और विज्ञान के माध्यम से ही विश्वगुरु बन सकते हैं।" उन्होंने सम्मेलन के एक अंतरराष्ट्रीय आयोजन के रूप में विकसित होने की आशा व्यक्त की।

सीएसआईआर-एएमपीआरआई के निदेशक श्री अवनीश कुमार श्रीवास्तव ने अपने



स्वागत भाषण में इस सम्मेलन के माध्यम से हिंदी में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी अनुसंधान को बढ़ावा देने के महत्व पर प्रकाश डाला और वैज्ञानिक समुदाय से इसमें सक्रिय योगदान देने का आग्रह किया। सीएसआईआर-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला के निदेशक और सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-एनआईएससीपीआर) के कार्यवाहक निदेशक प्रो. वेणुगोपाल अचंता ने विज्ञान संचार के माध्यम के रूप में हिंदी के उपयोग के महत्व को रेखांकित किया। विज्ञान कवि गोष्ठी, सीएसआईआर-एनआईएससीपीआर द्वारा सम्मेलन के अन्य सह-आयोजकों के सहयोग

से आयोजित एक विशेष कार्यक्रम है, जो 30 जुलाई, 2024 को आयोजित किया गया। मध्य प्रदेश सरकार के संस्कृति, पर्यटन, धार्मिक न्यास और धर्मस्व विभाग के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेन्द्र भाव सिंह लोधी द्वारा उद्घाटन किया गया। इस विज्ञान कविता संगोष्ठी ने कवियों, विज्ञान संचारकों और लेखकों को हिंदी के माध्यम से विज्ञान को बढ़ावा देने के लिए एक मंच प्रदान किया। इस कार्यक्रम में 12 प्रतिष्ठित विज्ञान कवियों ने अपनी मनमोहक कविताएं प्रस्तुत कीं। 31 जुलाई को समापन सत्र में मध्य प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ला ने भाग लिया। इस सत्र के

दौरान विभिन्न विश्वविद्यालयों और सीएसआईआर-एएमपीआरआई के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। सम्मेलन में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, आयुर्वेद और विज्ञान संचार के विविध विषयों पर छह सत्र आयोजित किए गए।

राष्ट्रीय हिंदी विज्ञान सम्मेलन 2024 हिंदी में विज्ञान और प्रौद्योगिकी आधारित अनुसंधान को समृद्ध करने और भाषा में वैज्ञानिक चर्चा के साथ अधिक से अधिक जुड़ाव को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

महाकवि कालिदास के साहित्य पर केन्द्रित दो दिवसीय आयोजन सम्पन्न



जुलाई माह में दिनांक 18-19 को तिरुपति आंध्रप्रदेश, में 'कालिदास के साहित्य में वैज्ञानिकता, कलात्मकता एवं साहित्यिक उत्कृष्टता' के तत्वों की विवेचना पर केंद्रित दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन साहित्य अकादमी दिल्ली, संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार तथा राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय तिरुपति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। साहित्य अकादमी, नई दिल्ली और राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (एनएसयू), तिरुपति द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित 'कालिदास के साहित्य में साहित्यिक, काव्य सौंदर्य और वैज्ञानिक प्रतिभा' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन गुरुवार को शुरू हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन साहित्य अकादमी के संस्कृत शोध परिषद के समन्वयक प्रोफेसर हरेकृष्ण सतपति ने किया। उन्होंने संस्कृत साहित्य में साहित्यिक भव्यता, काव्य सौंदर्य और वैज्ञानिक प्रतिभा पर प्रकाश डाला और संस्कृत साहित्य में प्राचीन कवियों, ऋषियों और द्रष्टाओं द्वारा वर्णित महत्वपूर्ण वैज्ञानिक अवधारणाओं की खोज करने की आवश्यकता पर बल दिया। एसवी वैदिक विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर एस सुदर्शन शर्मा ने संस्कृत साहित्य में प्राचीन कवियों द्वारा वर्णित व्यापक वैज्ञानिक अवधारणाओं पर विस्तार से बताया। प्रोफेसर के रामसूर्यनारायण ने संस्कृत साहित्य में चित्रित विभिन्न वैज्ञानिक विषयों, विशेष रूप से 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' और 'उत्तर रामचरित' जैसी रचनाओं के बारे में बात की। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्राचीन संस्कृत साहित्य मानव जीवन के लिए मार्गदर्शक का काम करता है और सुझाव दिया कि इन ग्रंथों का अध्ययन आधुनिक समाज को मूल्यवान वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर जीएसआर कृष्णमूर्ति ने बताया कि सम्मेलन का उद्देश्य साहित्यिक ग्रंथों में निहित वैज्ञानिक तत्वों को उजागर करना और उन्हें भावी पीढ़ियों के सामने प्रस्तुत करना है। साहित्य अकादमी के अध्यक्ष और उप सचिव माधव कौशिक और एन सुरेश बाबू ने भी अपने विचार रखे। सम्मेलन में प्रोफेसर के राजगोपाला, डॉ भारत भूषण रथ, अन्य संकाय सदस्य और शोध विद्वान शामिल हुए।

संपादक की कलम से...



भाषा सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम है। इसके शुद्ध प्रयोग से जीवन सार्थक होता है और आत्मविश्वास बढ़ता है। आत्मविश्वास, सफलता, स्वाधीनता और आत्मरक्षा का सोपान है तथा प्राणी की मानसिक और आध्यात्मिक शक्ति है। इससे सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है जिससे भाव दृष्टि की स्पष्टता, मानसिक तुष्टि और अच्छी भावना आती है। अच्छी भावना से अच्छी सोच आती है और कार्य रूप में परिणत होती है। अतएव भाषाई प्रचार-प्रसार के लिए आत्मविश्वास के साथ सकारात्मक भाषा, स्वर संयोजन और वैश्विक राय तथा आधुनिक तकनीकी आदि से चलना श्रेयस्कर है। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में मध्य पिच पर गति को साधना होगा। दुविधा से एकाग्रता एवं शक्ति पर दुष्प्रभाव पड़ता है। भय और शंका रूपी डायनामाइट से दूसरों का विश्वास खंडित होता है। हमें निश्चिन्त सहित, भाषाओं की अंतर्निहित शक्ति को पहचानना और मार्ग प्रशस्त करना होगा।

सुख का एक द्वार बंद होने पर दूसरा खुल जाता है हमें उसे देखना होगा। प्रौद्योगिकी की दुनियाँ ने नए द्वार खोले हैं जिनके सदुपयोग से सार्थक भाषायी क्रान्ति और मानवीय वैश्विक शांति संभाव्य है। आइये, हम सब निर्मल मन और नेक नियति से भाषायी मार्ग प्रशस्त करने में अपना अनमोल योगदान दें और दुनिया की भाषाओं को सम्मान सहित भावी पीढ़ी को सौंपें।

-डॉ. जयशंकर यादव

लिपि पर खतरा



आज हमारी लिपि पर स्पष्ट खतरा दिखाई दे रहा है। हिंगलिश प्रचलित हो रही है। यहाँ तक की भाषा का रोमानीकरण हो रहा है। यह धारणा बलवती होती जा रही है कि नई पीढ़ी को देवनागरी लिपि नहीं आती। फ़िल्मों में डबिंग रोमन भाषा में होती जा रही है। यही स्थिति विज्ञापनों की है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह व्यवस्था की गई है कि भारत की राजभाषा हिंदी होगी और यह देवनागरी लिपि में लिखी जाएगी। लिपि केवल अक्षरों का समुच्चय नहीं है। इसका एक इतिहास है। भाषा के ठीक उच्चारण के लिए इसे ठीक से लिखा जाना भी आवश्यक है। पश्चिम के लोग हिंदी शब्दों का ठीक उच्चारण नहीं कर पाते। हमारी भाषा की वैज्ञानिकता का आधार हमारी लिपि भी है। लिपि, उच्चारण, अभिव्यक्ति, अर्थ का गहन संबंध है। हमें इसके लिए सजग और जागरूक होने की आवश्यकता है। वाट्सएप, फ़ेसबुक, संदेशों के आदान-प्रदान में देवनागरी लिपि का ही उपयोग करें। यह भाषा के अंत की या संरक्षण की शुरूआत हो सकती है। आपकी दृष्टि और प्रतिबद्धता इसकी दिशा तय करेगी।

अनिल शर्मा 'जोशी'

अध्यक्ष, वैश्विक हिंदी परिवार

75वें भारत को जानो कार्यक्रम

डायस्पोरा रिसर्च एंड रिसोर्स सेंटर (डीआरआरसी) - अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद (एआरएसपी) ने बुधवार, 24 जुलाई 2024 को प्रवासी भवन में 75वें भारत को जानो कार्यक्रम (केआईपी) के लिए एक विशेष सम्मान और सहभागिता कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में नौ देशों - फिजी, मॉरीशस, त्रिनिदाद और टोबैगो, गुयाना, म्यांमार, दक्षिण अफ्रीका, सूरीनाम, मलेशिया और न्यूजीलैंड के 39 केआईपी प्रतिनिधियों सहित कई प्रतिभागी शामिल हुए।

एआरएसपी के सचिव प्रोफेसर गोपाल अरोड़ा ने केआईपी प्रतिनिधियों का स्वागत करने और उनके साथ बातचीत करने का अवसर प्रदान करने के लिए विदेश मंत्रालय को धन्यवाद दिया। उन्होंने एआरएसपी के आदर्श वाक्य 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (विश्व एक परिवार है) के पीछे के गहरे अर्थ पर प्रकाश डाला और इसके प्रतीक सार्वभौमिक मूल्यों पर जोर दिया।

एआरएसपी के अध्यक्ष राजदूत वीरेंद्र गुप्ता ने भारतीय प्रवासी युवाओं से जुड़ने में केआईपी प्रतिनिधिमंडल के महत्व पर बल दिया। उन्होंने गुयाना, फिजी, मॉरीशस और दक्षिण अफ्रीका में भारतीय प्रवासी समुदायों के युवा व्यक्तियों के साथ संबंधों को मजबूत करने में अंतर-राष्ट्रीय सहयोग परिषद की भूमिका पर प्रकाश डाला। डॉ. खुराना ने स्वच्छ वायु में सांस लेने के महत्व को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने के लिए ग्राफ, डेटा और विचारोत्तेजक छवियों जैसे सम्मोहक दृश्य साधनों का उपयोग करते हुए हमारे दैनिक जीवन में स्वच्छ वायु के गहन महत्व को कुशलतापूर्वक रेखांकित किया।

एआरएसपी के महासचिव श्री श्याम परांडे ने व्यावहारिक चर्चाओं के लिए राजीव खुराना का आभार व्यक्त किया। फिजी और मॉरीशस जैसे स्थानों की अपनी यात्राओं पर विचार करते हुए उन्होंने दिल्ली और मुंबई जैसे शहरों में प्रदूषित हवा के प्रभाव पर जोर दिया। उन्होंने युवा बने रहने में रचनात्मकता के महत्व और पर्यावरण को एक दिव्य उपहार के रूप में संरक्षित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। श्री परांडे ने प्रवासी शक्ति के उदाहरण साझा किए, जैसे यूक्रेन युद्ध के दौरान भारतीय और अफ्रीकी छात्रों की सहायता करना और तुर्की में आपदा राहत। उन्होंने भारत की सॉफ्ट पावर और "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना पर जोर देते हुए समापन किया, जो मानवता को एक परिवार के रूप में देखता है।

राजदूत दयाकर ने विविध वातावरणों के अनुकूल होने के दौरान भारतीय जड़ों, मूल्यों और सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने के महत्व पर प्रकाश डाला।

वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा आयोजित रविवारीय कार्यक्रम

(विश्व हिंदी सचिवालय, अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद, वातायन, भारतीय भाषा मंच और केंद्रीय हिंदी संस्थान के तत्वावधान में)

(रिपोर्ट लेखन - डॉ. जयशंकर यादव)

हिंदी-मराठी संबंध : स्थिति और संभावनाएँ (7 जुलाई 2024)



वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के संयोजक श्री ए. विनोद जी ने कहा कि सभी भारतीय भाषाएँ एक ही परिवार से सम्बद्ध हैं। माँ, मातृभाषा और मातृभूमि का कोई विकल्प नहीं होता। हमें विकसित भारत के लिए भाषाई चुनौतियाँ का मुकाबला करना चाहिए। मुख्य अतिथि के रूप में लेखक डॉ. दामोदर खड़से का कहना था कि भाषा के प्रति हमें व्यापक दृष्टिकोण अख्तियार करना चाहिए। महाराष्ट्र नागपुर से शुरू हुआ विश्व हिंदी सम्मेलन और खेर आयोग की सिफारिशों मील का पत्थर साबित हुई हैं। सान्निध्यप्रदाता श्री अनिल जोशी ने स्वतन्त्रता आंदोलन और भाषिक स्वावलंबन की चर्चा करते हुए लिपि की एकता की वकालत की। उन्होंने ज्ञान विज्ञान के साथ फिल्म उद्योग में भारतीय भाषाओं के बढ़ते चरण को संतोषप्रद बताया।

वक्ता के रूप में डॉ.मनिवेन कालेज मुंबई के व्याख्याता डॉ. प्रशांत देशपांडे ने मुंबई को भाषाई मिठास और सौहार्द्र का महानगर बताया। सुप्रसिद्ध मराठी लेखक डॉ. श्रीपाद भालचन्द्र जोशी ने मराठी के क्रांतिकारी इतिहास से सबक लेने और भाषाई समरसता को बढ़ावा देने तथा क्षेत्रवाद की जकड़न से ऊपर उठाने की सलाह दी। अनुवादक डॉ. रंजना अरगड़े का मत था कि अनुवाद का बढ़ावा ज्ञानोदय और भाषाई अन्तः संबंध मजबूत कराता है। विमर्श की सहभागिता में साहित्यकार समीक्षा तैलंग और ज्योति देसाई तथा विजय नगरकर ने राष्ट्रीय एकता हेतु भाषायी अन्तः संबंध मजबूत करने की पुरजोर अपील की।

आरंभ में श्री महादेव कोलूर ने स्वागत किया। मणिवेन महिला महाविद्यालय मुंबई के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. रवीन्द्र कात्यायन द्वारा बखूबी संचालन किया गया और अंत में डॉ. जयशंकर यादव

द्वारा आत्मीयता से कृतज्ञता प्रकट की गई।

मॉरीशस में हिंदी शिक्षण और चुनौतियाँ (14 जुलाई 2024)



अध्यक्षीय उद्बोधन में विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने कहा कि मॉरीशस में सभी स्तरों पर सुचारु रूप से पठन पाठन हो रहा है किन्तु अब विद्यार्थियों की संख्या में कमी होना सोचनीय है। इसके लिए प्रशासन, शिक्षक, अभिभावक और विद्यार्थियों का सम्मिलित चतुष्कोणीय बल आवश्यक है। बातचीत में हिंदी, तकनीकी में हिंदी, संचार माध्यमों में हिंदी और अधुनातन प्रौद्योगिकी सहित शिक्षण प्रशिक्षण निहायत जरूरी है। वैश्विक हिंदी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी का कहना था कि वैश्विक स्तर पर ऑनलाइन हिंदी शिक्षण समय की मांग है। विद्यार्थियों के भटके हुए भविष्य को बेहतर समन्वय सहित भाषा के माध्यम से सही दिशा देना और नेटवर्किंग को मजबूत करना अत्यंत आवश्यक है।

मॉरीशस के शिक्षा मंत्रालय के निदेशक डॉ. निरंजन बीगन ने कहा कि यहाँ 250 प्राथमिक पाठशालाओं, 70 माध्यमिक संस्थाओं, 250 बैठकों सहित उच्च स्तर तक हिंदी शिक्षण और छात्रवृत्ति के व्यवस्था है। बहुसांस्कृतिक देश में हम हिंदी न बिसराएँ और पारंपरिक ज्ञान सहित शाश्वत मूल्यों को कायम रखें। महात्मा गांधी संस्थान मॉरीशस की प्रमुख डॉ. अलका धनपतने बताया कि यहाँ हिंदी के साथ संस्कृत, मराठी और भोजपुरी आदि के शिक्षण की व्यवस्था है। अब अरबी की ओर भी रुझान है। मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन की मैनेजर डॉ. शशि दुकन ने कहा कि भारतीय भाषाओं में संदेश पहुंचाने और स्वस्थ मनोरंजन करने तथा प्रेरित करने का महत्वपूर्ण कार्य मॉरीशस रेडियो सशक्त रूप में कर रहा है। प्राथमिक विभाग की शिक्षिका गायत्री कालीचरण ने बताया कि पिछले पाँच वर्षों में यहाँ संचार कौशल बहुत बढ़ा है। भाषा गयी तो संस्कृति गई किन्तु जहाँ चाह हो वहाँ राह निकल आती है। विमर्श में साहित्यकार कल्पना लालजी ने मन्तव्य

दिया कि कक्षा की गतिविधियों में विद्यार्थी स्वयं नाटक लिखने हैं। मॉरीशस में बी.ए. हिंदी की सर्वाधिक प्राप्तांकों वाली छात्रा श्रावणी बिहारी ने हर्षित भाव से हिंदी सेवा का संकल्प प्रकट किया।

कार्यक्रम में स्वागत उद्बोधन भारत से साहित्यकार डॉ. जवाहर कर्नावट और धन्यवाद ज्ञापन मॉरीशस से डॉ. अंजू घरभरन द्वारा किया गया। संयोजन, समन्वयन और संचालन की महती जिम्मेदारी मॉरीशस त्रिनिदाद एवं तुबैगो में भारत की पूर्व द्वितीय सचिव डॉ. सुनीता पाहुजा द्वारा बखूबी निभाया गया।

विदेशी भाषाओं और हिंदी में पारस्परिक अनुवाद (28 जुलाई 2024)



ओसाका विश्वविद्यालय के प्रो. वेद प्रकाश द्वारा विदेशी भाषाओं से हिंदी में अनुवाद की महत्ता रेखांकित करते हुए कार्यक्रम की शुरुआत की गई। विशेष वक्ता के रूप में दैतो बुनका विश्वविद्यालय जापान के प्रो. हिदेआकी इशिदा ने कहा कि अनुवाद के माध्यम से रचना को समझना और अपनी भाषा में बदलने का अभूतपूर्व मौका मिलता है। लेखकों और अनुवादकों के बीच भरोसा कायम रहना नितांत आवश्यक है। हिन्दुस्तानी समाज रूस की महासचिव प्रगति टिपनीस ने अनुवाद में ध्वनि, लय और मुहावरों की महत्ता और चुनौतियों को समझाया और संस्कृति को कायम रखने हेतु व्यापक जानकारी को आवश्यक बताया। थाईलैंड में चुलालोंगकार्न विश्वविद्यालय बैंकाक के हिंदी व्याख्याता और शोधार्थी श्री किट्टीपोंग बूनकेड का कहना था कि हिंदी-थाई और संस्कृत का प्राचीन काल से गहरा संबंध है। स्वीडन के उप्साला विश्वविद्यालय के हिंदी भाषा विज्ञान के छात्र श्री अन्तोन ब्यरके ने 20 वर्षों के अनुवाद के अनुभव सहित ज्ञान चतुर्वेदी की पागलखाना पुस्तक के अनुवाद के अंश को प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का शालीन ढंग से संचालन स्पेन के मैड्रिड से डॉ. पूजा अनिल द्वारा सूक्तियों के उल्लेख एवं अनुवाद सहित संभाला गया। डॉ. जयशंकर यादव द्वारा आभार प्रकट किया गया। सभी साप्ताहिक कार्यक्रमों के प्रमुख की भूमिका का निर्वहन ब्रिटेन से साहित्यकार दिव्या माथुर द्वारा निभाया गया। तकनीकी दायित्व सर्वश्री मोहन बहुगुणा, सुरेश कुमार उरतुप्त और कृष्णा कुमार ने संभाला। इससे देश विदेश के अनगिनत भाषा प्रेमियों का ज्ञानार्जन हुआ।

कंप्यूटर और भाषा कार्यशाला : एज-इंटरनेट ब्राउज़र क्यों है खास (21 जुलाई 2024)



वैश्विक हिंदी कार्यशाला में विषय की बारीकियों को समझाते हुए सुप्रसिद्ध भाषा तकनीकीविद एवं माइक्रोसॉफ्ट भारत में निदेशक श्री बालेंदु शर्मा दाधीच ने विशेष प्रस्तुति सहित विस्तार से बताया। यदि हम बदलाव के साथ नहीं बदलेंगे तो बदलाव हमें बदल देगा। यह कार्यक्रम वैश्विक हिंदी परिवार शीर्षक से यू ट्यूब पर भी देखा जा सकता है जिसकी बारीकियाँ सचित्र दृष्टिगत हैं। कार्यक्रम का संचालन गृह मंत्रालय के सहायक निदेशक डॉ. मोहन बहुगुणा ने सहज भाव से संभाला। विमर्श के अंतर्गत डॉ. राजकुमार शर्मा,

ललित भूषण, आदित्य नाथ तिवारी शोधार्थी अपेक्षा और अपूर्वा सिंह ने भाग लेकर गहन चिंतन और मनन का एहसास कराया।

आरंभ में रेल मंत्रालय के राजभाषा निदेशक डॉ. बरुन कुमार ने स्वागत उद्बोधन दिया और अंत में आईआईटी खड़गपुर से डॉ. राजीव रावत द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

गीतकार डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र व नवांकुर गीतकार वृंद

विश्व-प्रसिद्ध साहित्य-संस्कृति मंच 'वातायन-यूके' के तत्वावधान में 6 जुलाई, 2024 को 'गीत मंजरी: भारत के प्रतिनिधि युवा गीतकार' शृंखला के अंतर्गत नवांकुर रचनाकारों ने हृदयस्पर्शी गीतिकाओं की सस्वर मनमोहक प्रस्तुतियां दीं और मंच को गुंजायमान कर दिया। ब्रिटेन के सुपरिचित कवि श्री आशीष मिश्र के बखूबी मंच-संचालन में भारत से इस आभासी मंच पर पधारे गीतकारों ने श्रोता-दर्शकों को आद्योपांत बाँधे रखा। नए शिल्प, नए छंद-विधान तथा प्रयोगधर्मी कलेवर से सज्जित रचनाओं की श्रोता-दर्शकों समेत संगोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र ने भी सराहना की।



कार्यक्रम के आरंभ में श्री आशीष मिश्र ने इस संगोष्ठी के अध्यक्ष तथा प्रतिभागियों के संबंध में परिचय दिया। तदनंतर, सुश्री यशोदा नैलवाल ने 'थोड़ी-सी शर्माई रात, थोड़ी-सी संकुचाई रात/आंखों में अलसाई रात/गीतों की तरुणाई रात', 'बांधते दिल के दिल के गलीचे नयन, जीतना ये कहाँ से सीखे नयन', 'आंखों में पालते हैं उम्मीद का सहर', 'गीत मेरे जब तुमने गाए, महका मेरा चंदन-वन' 'जैसी गीति-रचनाओं से श्रोताओं पर सम्मोहिनी की चादर डाल दी।

श्री रामायण धर द्विवेदी के गीतों 'देह में श्वास भर के चले जाइए', 'याद मेरे गीत

रखना, याद मेरे गीत रखना', 'अगर-मगर कर समय बिताना छोड़िए' ने समां बांध दिया। सुविदित गीतकार सुश्री संस्कृति मिश्र सस्वर, 'शूल से रोज लड़ती रही बेटियां/फूल बनकर बिखरती रही बेटियां', 'जाने कब सुधि लेगा मेघा, कब धरती भीजेगी' और 'ओ चिरई मेरे घर आना, मां के आंचल में छुप जाना' का पाठ किया तथा सबको सुकुमार प्रकृति की गोद में डाल दिया। तदनंतर, श्री आशीष मिश्र की रचना 'अक्षरों को पूजते हैं, शब्द की परिकल्पना से' ने भी मंच को सम्मोहिनी की झीनी-झीनी चादर से आवृत किया।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र ने इन गीतकारों को अपने आशीर्वाद-

प्रसाद से कृतकृत्य करते हुए कहा कि वे बाजार के लुभावने विज्ञापनों से अलग हटकर, गीत-सृजन की साधना में अग्रसर हों जिससे कि हिंदी कविता आगे बढ़ सके। उन्होंने 'मेरी आवाज़ है बंदगी, ये नहीं अनसुनी जाएगी', 'शोखियों से सादगी की बात कर, बात कर/ मौत से भी दिल्लगी की

बात कर, बात कर'। 'शर्म से वह सिर झुकाकर देखना, ग़ैर से नज़रें बचाकर देखना', 'आदमी गुम जाएगा, उसका पता रह जाएगा', 'लौट आए हैं जमुन जल मेघ, सिंधु की अंतर्कथा लेकर' जैसी रचनाएं जहाँ गीति-माधुर्य से स्नात थीं, वहीं वे नवांकुर गीतकारों के लिए शिल्प और रचना-विधान के संबंध में प्रेरक थीं।

इस विशिष्ट संगोष्ठी के ऑनलाइन प्रसारण में श्री कृष्ण कुमार और सुश्री शिवि श्रीवास्तव का सराहनीय योगदान रहा। कार्यक्रम का समापन डॉ. मनोज मोक्षेन्द्र के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ जबकि 'वातायन-यूके' की संचालक प्रतिष्ठित प्रवासी साहित्यकार सुश्री दिव्या माथुर ने सूचित किया कि अगली संगोष्ठी विज्ञान कथा-लेखन पर आधारित होगी।

(प्रेस रिपोर्ट- डॉ. मनोज मोक्षेन्द्र)

महिला लेखिकाओं द्वारा विज्ञान कथा साहित्य चर्चा और विज्ञान कहानियों का वाचन

वातायन-यूरोप द्वारा 20 जुलाई 2024 को साहित्य, संस्कृति, संगीत और कला के विभिन्न पक्षों पर संगोष्ठियों की द्विशतकीय पारी को पूरा करने के लिए कहानी विधा के एक अभिन्न पक्ष अर्थात् विज्ञान कथा पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसका शीर्षक था - 'विज्ञान और पर्यावरण: स्त्री कथाकारों की भूमिका'। इस कार्यक्रम की सूत्रधार थीं--हमारे कथा-संसार की विशिष्ट कथाकार मनीषा कुलश्रेष्ठ, जिन्होंने संगोष्ठी में श्रोता-दर्शकों को आद्योपांत बांधे रखा। आरंभ में मनीषा कुलश्रेष्ठ ने 'वातायन-यूके' की लंबे समय से चल रही संगोष्ठियों के लिए इस मंच की संस्थापक और प्रख्यात प्रवासी लेखिका सुश्री दिव्या माथुर को बधाई दी। तदनंतर,

उन्होंने महिला विज्ञान कहानीकारों, नामतः डॉ. ज्योत्सना मिश्रा, सुश्री श्रद्धा और सुश्री प्रज्ञा गौतम का सांगोपांग परिचय दिया। डॉ. ज्योत्सना मिश्रा पेशे से प्रसूतिविज्ञानी और रंगमंचकर्मी हैं। लेखिका सुश्री श्रद्धा, प्रकृति से जुड़ी बाल कथाएं लिखती हैं और नवलेखन ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित भी हैं। सुश्री प्रज्ञा गौतम विज्ञान की व्याख्याता हैं तथा विज्ञान से संबंधित अनेकानेक पुरस्कारों से नवाज़ी गई हैं।

सुश्री श्रद्धा ने 'अंजुरी भर मिट्टी' शीर्षक से कहानी का पाठ किया जिसका विषय पर्यावरण से संबंधित था। कहानी इतनी दिलचस्प थी कि इसे श्रोता पूरी ध्यानमग्नता से सुनते रहे। सुश्री प्रज्ञा गौतम ने कहानी 'धरती छोड़ने के बाद' का वाचन किया जो धरती पर पर्यावरण के बेहद प्रतिकूल होने के कारण मनुष्य के अंतरिक्ष में अन्यत्र प्रवासित होने के लोमहर्षक विषय पर आधारित था। यह कहानी धरतीवासी मनुष्यों के लिए एक सजग चेतावनी है। सुश्री ज्योत्सना मिश्रा ने जिस विज्ञान कहानी का वाचन किया, वह वैक्सीन के

लंबे समय से किए जा रहे प्रयोगों पर आधारित थी। इस कहानी का शीर्षक था : 'वायरस से जंग की कथा' या 'पहली वैक्सीन की कहानी'। कथाकार डॉ. ज्योत्सना ने विषाणुओं से मुक्ति पाने के लिए वैक्सीन के आविष्कार और प्रयोग पर बेहतरीन कथा-वाचन किया। यह कहानी विषाणुओं के प्रकोप का ऐतिहासिक दस्तावेज़ भी प्रस्तुत करती है।

तदनंतर, सुश्री शिखा वाष्णों की गुजारिश पर सुश्री मनीषा कुलश्रेष्ठ ने विज्ञान कहानी 'समुद्री घोड़ा' के कुछ अंशों का ही पाठ किया क्योंकि यह कहानी बहुत लंबी है। यह कहानी भविष्य में घटने वाली एक घटना का उल्लेख करती है जिसमें एक दुर्घटना में एक दंपति बुरी तरह आहत हो जाता है; पत्नी गर्भ धारण करने की क्षमता खो देती है जबकि

पति के यकृत के क्षतिग्रस्त होने के कारण उसका रोपण किया जाता है। पूरी कहानी दंपती की आशा-निराशा के मध्य दोलित होती है।

कहानियों की अद्भुत कथानकों के संदर्भ में अनेक श्रोताओं, यथा--श्री देवेंद्र मेवाणी, सुश्री अरुण अजितसरिया, श्री यूरी

बोत्विकिन, डॉ. कुश चतुर्वेदी, सुश्री दिव्या माथुर ने इन महिला कथाकारों की

विज्ञान कहानियों पर अपनी-अपनी सुविचारित टिप्पणियां कीं और प्रश्न पूछे जिनका यथोचित समाधान कथाकारों द्वारा किया गया। तदुपरांत, मनीषा कुलश्रेष्ठ ने मंच का सुनियोजित ढंग से संचालन करते हुए तीनों स्त्री कथाकारों की कहानियों में व्यवहृत विषय-वस्तु पर संक्षेप में प्रकाश डाला और इन कथाकारों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम का समापन सुश्री शिखा वाष्णों के धन्यवाद-ज्ञापन से हुआ। इस संगोष्ठी में श्रोताओं की बड़ी संख्या में उपस्थिति भी थी जिनमें प्रो.यूरी बोत्विकिन, प्रो. ल्यूडिला खोखलोवा, प्रो. तोमियो मिज़ोकांमी, सुधा ओम ढींगरा, आदेश गोयल, शिखा वाष्णों, कृष्णा, देवेंद्र मेवाणी, गीतू गर्ग, अरुणा अजितसरिया विशेष उल्लेखनीय हैं। इस ऑनलाइन कार्यक्रम के निर्विघ्न प्रसारण में तकनीकी विशेषज्ञ श्री कृष्ण कुमार का विशेष योगदान रहा।

(प्रेस रिपोर्ट- डॉ. मनोज मोक्षेन्द्र)

अमेरिका एवं भारत ने सांस्कृतिक संपत्ति समझौते पर हस्ताक्षर किये



गत 26 जुलाई, 2024 को भारत में अमेरिकी राजदूत एरिक गार्सेटी और भारतीय संस्कृति मंत्रालय के सचिव गोविंद मोहन ने संस्कृति

मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत की मौजूदगी में दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संपदा समझौते पर हस्ताक्षर किए। यह आयोजन दोनों देशों के विशेषज्ञों द्वारा लगभग दो वर्षों के परिश्रमपूर्ण कार्य का परिणाम है और राष्ट्रपति बाइडेन और प्रधानमंत्री मोदी की जून 2023 में उनकी बैठक के बाद जारी संयुक्त वक्तव्य में उजागर सांस्कृतिक विरासत की रक्षा के लिए सहयोग बढ़ाने की प्रतिबद्धता को पूरा करता है। भारत में अमेरिकी दूतावास के साथ काम कर रहे अमेरिकी विदेश विभाग के शैक्षिक और सांस्कृतिक मामलों के ब्यूरो ने इस सांस्कृतिक संपदा समझौते को मूर्त रूप देने के लिए भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के साथ साझेदारी में काम किया।

काव्य रंग ने अंग्रेज कवि लार्ड बायरन के सम्मान में किया काव्य पाठ का आयोजन



विगत 27 जुलाई, शनिवार को काव्य रंग साहित्यिक संस्था, नाटिघम, यू.के. के प्रसिद्ध अंग्रेज कवि लार्ड बायरन के साहित्यिक 200 वर्ष मनाने हेतु 'काव्य रंग' ने लार्ड बायरन के ऐतिहासिक घर न्युस्टेड एबे में बहुभाषीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया। इस अवसर पर उपस्थित गणमान्य अतिथियों में लार्ड लेफ्टीनेट वेरोनिका पिकरिंग, नाटिघम काउंटी कौंसिल के चेयरपर्सन रिचर्ड बटलर के साथ-साथ काव्य रंग साहित्यिक संस्था की अध्यक्ष श्रीमती जय वर्मा आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम में तीस से अधिक कवियों ने काव्य पाठ किया। हरमिंदर दुआ ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

साहित्य का विश्व रंग 'अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी' आयोजित

गत 27 जुलाई को 'विश्व रंग' के अंतर्गत साझा संसार हालैंड, वनमाली सृजनपीठ दिल्ली, प्रवासी भारतीय साहित्य एवं

संस्कृति शोध केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में 'साहित्य का विश्व रंग' अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी आभासी माध्यम से आयोजित की गयी। कार्यक्रम में रचनापाठ करने वाले रचनाकारों में डॉ. सोमदत्त काशीनाथ (मारीशस), डॉ. सुनीता शर्मा (न्यूजीलैंड), डॉ. नितिन उपाध्ये (यु.ए.ई.) श्री महेश दर्पण (भारत), डॉ. नीलम जैन (अमेरिका), शामिल थे। संगोष्ठी की अध्यक्षता भारत से श्री संतोष चौबे वरिष्ठ साहित्यकार ने तथा संचालन अमेरिका से सुश्री विनीता तिवारी ने किया। कार्यक्रम में सान्निध्य आकशवाणी के पूर्व महानिदेशक एवं वरिष्ठ कवि श्री लीलाधर मंडलोई ने प्रदान किया। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन श्री रामा तक्षक अध्यक्ष 'साझा संसार (नीदरलैंड्स)' ने किया।



वियेना में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया भारतीय डायस्पोरा को सम्बोधित



गत 10 जुलाई को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपनी ऑस्ट्रिया यात्रा के दौरान वियेना में भारतीय डायस्पोरा को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह उनका ऑस्ट्रिया का पहला दौरा है। उन्होंने कहा कि भारत और ऑस्ट्रिया अपनी दोस्ती के 75 वर्ष मना रहे हैं। भारत और ऑस्ट्रिया के बीच समानताओं का जिक्र करते हुए श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि प्रजातंत्र दोनों देशों को जोड़ता है। भारतीय डायस्पोरा की चर्चा करते हुए प्रधानमंत्री जी ने कहा- "ऑस्ट्रिया में रह रहे भारतीयों की संख्या बहुत बड़ी नहीं है। लेकिन ऑस्ट्रिया के समाज में भारतीय समुदाय का योगदान प्रशंसनीय है। "भारतीय समुदाय को शुभकामनाएं देते हुए और आभार प्रकट करते हुए उन्होंने आगे कहा कि ऑस्ट्रिया का ये पहला दौरा बहुत ही सार्थक रहा है।

महात्मा गांधी की प्रतिमा का अनावरण

एस जयशंकर ने टोक्यो में महात्मा गांधी की

प्रतिमा का अनावरण किया और शांति का संदेश दिया



28 जुलाई को विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने टोक्यो के फ्रीडम प्लाजा में महात्मा गांधी की प्रतिमा का अनावरण किया और आज के वैश्विक संघर्षों और ध्रुवीकरण के बीच गांधी जी के संदेशों की स्थायी प्रासंगिकता पर जोर दिया। डॉ.

जयशंकर ने अहिंसा, स्थिरता और समावेशिता के लिए गांधीवाद पर जोर दिया।

नेपाल में भारतीय दूतावास ने किया प्रार्थना समारोह का आयोजन



आषाढपूर्णिमा के शुभ अवसर पर नेपाल में भारत (काठमांडू स्थित भारतीय दूतावास) ने नेपाल के मठों से श्रेश्ठ, महायान और वज्रयान संप्रदायों के

प्रतिनिधियों के साथ एक प्रार्थना समारोह आयोजित किया। पवित्र मंत्रों और प्रार्थनाओं ने सारनाथ में भगवान बुद्ध के प्रथम उपदेश की याद दिलाई तथा भारत और नेपाल के बीच गहरे सांस्कृतिक संबंधों को रेखांकित किया। विदेश मंत्रालय, भारत सरकार तथा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद ने नेपाल में भारत-नेपाल मित्रता को मजबूत करने के उद्देश्य से कार्यक्रम का आयोजन किया।

हिंदी अकादमी दिल्ली द्वारा प्रेमचंद पर केंद्रित कार्यक्रम आयोजित



हिंदी अकादमी, दिल्ली द्वारा दिनांक 31.07.2024 को हिंदी अकादमी, दिल्ली द्वारा 'वर्तमान समय में प्रेमचंद की प्रासंगिकता' विषय पर श्रीमती ममता कालिया की अध्यक्षता में संगोष्ठी का आयोजन तथा अकादमी द्वारा प्रकाशित

पुस्तक प्रेमचंद कृत 'निर्मला' का विमोचन भी किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. कुमुद शर्मा, उपाध्यक्ष, साहित्य अकादमी उपस्थित रहीं। वक्ताओं के रूप में इग्नू के डॉ. जितेंद्र श्रीवास्तव, डॉ. अजय नावरिया व श्री अंशु कुमार चौधरी ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किए।

अकादमी के सचिव श्री संजय कुमार गर्ग ने कार्यक्रम का आरंभ करते हुए कहा कि प्रेमचंद ने अपनी पुस्तकों में स्त्रियों के उत्थान, उनकी शिक्षा आदि पर जोर दिया जिनकी प्रासंगिकता आज भी है। कार्यक्रम के अंत में अकादमी के उपसचिव श्री ऋषि कुमार शर्मा ने अपने धन्यवाद ज्ञापन में सभी वक्ताओं व श्री सुरेंद्र शर्मा का धन्यवाद करते हुए कहा कि हमें प्रेमचंद को अवश्य पढ़ना चाहिए। हिंदी अकादमी सदा प्रेमचंद के प्रचार-प्रसार के लिए तत्पर है।

13 जुलाई को आकाशवाणी भवन नई दिल्ली में आमंत्रित श्रोताओं के समक्ष सुप्रसिद्ध गीतकार संतोष आनंद के संस्मरणों पर आधारित कार्यक्रम का आयोजन किया



‘प्रो. नामवर सिंह स्मारक व्याख्यान’ : नामवर का होना और न होना



इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कला निधि विभाग ने ‘प्रो. नामवर सिंह स्मारक व्याख्यान’ का आयोजन किया। जिसका विषय था- ‘नामवर का

होना और न होना’। व्याख्यान के मुख्य वक्ता थे दिल्ली विश्वविद्यालय के- पूर्व सम कुलपति प्रो. सुधीश पचौरी और आईजीएनसीए के अध्यक्ष राम बहादुर राय ने अध्यक्षता की। इस अवसर पर डीन (प्रशासन) व कला निधि के विभागाध्यक्ष प्रो. रमेश चंद्र गौड़ एवं सदस्य सचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी भी उपस्थित थे। इसी आयोजन में नामवर सिंह कृत पुस्तक ‘हिंदी कविता की परम्परा’ का लोकार्पण भी किया गया। वाणी प्रकाशन से आई इस पुस्तक के संकलनकर्ता हैं- नामवर सिंह के पुत्र विजय प्रकाश सिंह।

साहित्य अकादमी ने आयोजित की ‘रामदरश मिश्र’ जन्मशती संगोष्ठी



गत 10 जुलाई, 2024 बुधवार को साहित्य अकादमी दिल्ली के सभाकक्ष रवीन्द्र भवन में सुप्रसिद्ध साहित्यकार रामदरश मिश्र की जन्मशती के उपलक्ष में एक संगोष्ठी आयोजित की गयी। यह संगोष्ठी तीन सत्रों में आयोजित की गयी। अलग-अलग सत्रों में अलग-अलग व्यक्तित्वों ने अध्यक्षता की और बीज वक्तव्य दिए। प्रथम सत्र में संगोष्ठी की अध्यक्ष थी- साहित्य अकादमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा तथा विशिष्ट अतिथि थे - प्रख्यात साहित्यकार रामदरश मिश्र। कार्यक्रम में स्वागत भाषण साहित्य अकादमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास ने तथा बीज वक्तव्य प्रकाश मनु ने दिया। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन अकादमी के उपसचिव देवेन्द्र कुमार देवेश ने ज्ञापित किया। अन्य सत्रों में विश्वनाथ त्रिपाठी, बालस्वरूप राही, ओम निश्चल, स्मिता मिश्र, गिरिश्वर मिश्र, वेदप्रकाश अमिताभ, अलका सिन्हा आदि लेखकों, कवियों ने भी भाग लिया।

अलग सत्रों में अलग-अलग व्यक्तित्वों ने अध्यक्षता की और बीज वक्तव्य दिए। प्रथम सत्र में संगोष्ठी की अध्यक्ष थी- साहित्य अकादमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा तथा विशिष्ट अतिथि थे - प्रख्यात साहित्यकार रामदरश मिश्र। कार्यक्रम में स्वागत भाषण साहित्य अकादमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास ने तथा बीज वक्तव्य प्रकाश मनु ने दिया। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन अकादमी के उपसचिव देवेन्द्र कुमार देवेश ने ज्ञापित किया। अन्य सत्रों में विश्वनाथ त्रिपाठी, बालस्वरूप राही, ओम निश्चल, स्मिता मिश्र, गिरिश्वर मिश्र, वेदप्रकाश अमिताभ, अलका सिन्हा आदि लेखकों, कवियों ने भी भाग लिया।

पूर्वोत्तर में हिंदी के विस्तार पर विचार-विमर्श



केंद्रीय हिंदी संस्थान के शिलांग केंद्र पर हिंदी के विस्तार पर गहन विचार-विमर्श हुआ। इस अवसर पर क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय

(नेहू), शिलांग के कुलपति, प्रो. प्रभा शंकर, शिलांग मेघालय राज्य सरकार के निदेशक श्री स्वर्णनिल ताम्बे, (आई.ए.एस.), सेंट मेरी कॉलेज के हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष, प्रो. विवेकानंद पंडित, विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, शिलांग के निदेशक प्रो. रविन्द्र कुमार वेमुला ने भेंट कर राज्य में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु अपेक्षित सहयोग के लिए विचार-विमर्श किया।

त्रिवेणी कला संगम, मंडी हाउस, नई दिल्ली में ‘हिन्दवी उत्सव’ आयोजित



हिंदी साहित्य को समर्पित रेखा फाउंडेशन के उपक्रम ‘हिन्दवी’ की चौथी वर्षगांठ के मौके पर 28 जुलाई 2024 को त्रिवेणी कला संगम, मंडी हाउस, नई दिल्ली में ‘हिन्दवी उत्सव’ आयोजित किया गया।

‘हिन्दवी उत्सव’ में तीन सत्रों में कार्यक्रम हुए। कार्यक्रम का शुभारंभ शाम 4 बजे मुख्य अतिथि प्रसिद्ध साहित्यकार राधावल्लभ त्रिपाठी के वक्तव्य से हुआ। तीन सत्रों में आयोजित इस कार्यक्रम में प्रथम सत्र- ‘विमर्श सत्र : जो आदमी हम बना रहे हैं’ था। सत्र में अतिथि-वक्ता- कवि-समाज विज्ञानी बंदी नारायण, लेखक-पत्रकार ओम थानवी, संपादक-पत्रकार मनीषा पांडे (न्यूजलॉन्ड्री) शामिल हुए। इस विमर्श सत्र का संचालन मीडिया विश्लेषक विनीत कुमार ने किया।

द्वितीय सत्र : ‘विमर्श सत्र : सहना और कहना’ था। सत्र में अतिथि-वक्ता-लेखक हरिराम मीणा, आलोचक सुधा सिंह, कवि-इतिहासकार रमाशंकर सिंह शामिल हुए। इस विमर्श सत्र का संचालन लेखक-पत्रकार अणुशक्ति सिंह ने किया। आयोजन के तीसरे और अंतिम सत्र में कवि-कृष्ण कल्पित, निर्मला पुतुल, रामाज्ञा शशिधर, बाबुषा कोहली और पराग पावन शामिल हुए। इस सत्र का संचालन रचित ने किया। ‘हिन्दवी उत्सव’ के चौथे संस्करण को सफल बनाने के लिए ‘हिन्दवी टीम’ ने आयोजन में शामिल हुए अतिथियों, ‘हिन्दवी’ से जुड़े पाठकों और हिंदी-साहित्य-संसार के सभी साहित्य प्रेमियों-शुभचिंतकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

आस्ट्रेलिया से रेखा राजवंशी की कहानियाँ

लेखक : रेखा राजवंशी

आ

ज पूरे विश्व में प्रवासी हिंदी साहित्य की अपनी चमक और धमक है। आस्ट्रेलिया में रहने वाली रेखा राजवंशी हिंदी साहित्य की एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं। रेखा जी की कहानियाँ सीधे-सीधे वहाँ के जीवन, समाज और संस्कृति से जुड़कर अत्यंत साफगोई एवं किस्सागोई शैली में आस्ट्रेलियन परिवेश के ताने-बाने से हमारा परिचय कराते हुए कहीं कुछ प्रश्न उठाती हैं तो कहीं चौकाती भी हैं। इनमें परंपरागत भारतीय सांस्कृतिक मूल्य-चेतना का दिग्दर्शन और युगबोध की मांग के अनुसार भौतिकवादी मूल्यों के प्रति आकर्षण भी है।

लेखिका का स्वकथन है कि 'ये कहानियाँ आस्ट्रेलिया में

रहने वाले भारतीयों के अनुभवों और जिंदगी के संघर्ष को दर्शाने का प्रयास भर है।' निश्चित रूप से यह संघर्ष सबका अपना-अपना है। कहीं छात्रा काया का, तो कहीं मौत से जूझते एडवर्ड का, तो कहीं 'श्यामली जीजी का'। श्यामली जीजी की 18 साल की शादी शुदा जिंदगी की हलचल दरअसल पूरे समाज और परंपरागत भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों में हलचल पैदा कर देती है। 'कितने पुरुष मित्र भी थे पर संतोष न था, शांति न थी, भटकन थी, अकेलापन था और असहायता थी, जी रही थी, पर मकसद न था।'

विदेशों में रह रहे भारतीयों के समक्ष नस्लभेद एक गंभीर समस्या बन चुकी है। 'ब्यूटी पार्लर' कहानी भारतीय परिवारों के सुनहरे सपने से शुरू होती हुई सपनों के टूटने की दारुण गाथा को अत्यंत मार्मिक ढंग से व्यक्त करती है। 'रज्जो की रजामंदी' पाश्चात्य समाज में विवाहपूर्व "लीव इन, और भारतीय समाज व्यवस्था में 'बेमेल विवाह' दोनों की टकराहट को यथार्थ धरातल पर प्रस्तुत करती है। दरअसल ये अलग 'फ्लेवर' अलग 'तेवर' और अलग ही कलेवर की कहानियाँ हैं। विदेश की धरती पर आर्थिक आवश्यकताएँ और वैभवपूर्ण जीवन जीने की चाह में नैतिक-अनैतिकता के प्रश्न कहीं पीछे छूट गए हैं। 'फेयरवेल' कहानी इच्छा मृत्यु जैसी वैश्विक बहस को आगे बढ़ाती हुए पाठक को सोचने पर मजबूर करती है कि क्या मृत्यु का उत्सव मनाया जा सकता है?

ये विस्तृत कैनवास की कहानियाँ हैं। जो शत प्रतिशत प्रवासीपन लिए हुए प्रवासी हिंदी साहित्य की सही परख करती हैं। दरअसल ये कहानियाँ रेखा जी की प्रवासी जीवन यात्रा का अभूतपूर्व दस्तावेज हैं जो बिना किसी लाग-लपेट के पाठक से सीधे संवाद करती हैं।

-समीक्षक : प्रो. कमलेश कुमारी

मेरी इकतीस लघु कथाएँ

लेखक : डॉ. धनेश द्विवेदी

प्रकाशक : हिंदुस्तानी भाषा अकादमी

ल

घु कथा, कथा-साहित्य की ही एक विधा है। आज के परिपेक्ष्य में, जब व्यस्तताएँ हावी हों और समय की कमी हो तो अपनी व्यंग्यात्मक शैली के कारण लघुकथा एक लोकप्रिय विधा के रूप में अपना स्थान बनाने में सफल हुई है। यूँ तो हर विधा की कुछ न कुछ टर्म्स एंड कंडीशंस होती हैं लेकिन मोटे तौर पर 'लघु कथाओं' के स्वरूप के पीछे कुछ अनकहा भी होता है जिसे एक विस्तृत फलक के साथ पाठक के सामने रखने की क्षमता होती है। जिस लघुकथा में यह क्षमता होती है वही सफल लघुकथा के रूप में प्रतिष्ठित होती है।

हिंदुस्तानी भाषा अकादमी द्वारा प्रकाशित डॉ. धनेश द्विवेदी का लघु कथा संग्रह - मेरी इकतीस लघु कथाएँ, उपरोक्त कसौटी पर

खरा उतरता है। लगभग 160 पृष्ठों के इस कथा संग्रह में कुल इकतीस लघु कथाएँ संग्रहीत हैं। इस संग्रह की विशेषता यह है कि हर लघुकथा 'चार भाषाओं' में प्रस्तुत की गई है जिनमें मूल भाषा हिंदी के साथ ही उर्दू, अंग्रेजी और रूसी भाषा में प्रत्येक लघुकथा का अनुवाद उपलब्ध है। इसके पात्र विभिन्न सामाजिक विसंगतियों से जूझते, हैं और समाज के हर वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। भाषा को कलिष्ट और लच्छेदार बनाने का कोई प्रयास लेखक ने नहीं किया अतएव इसे अच्छा ही कहा जाएगा। संग्रह को पढ़ते समय रचनाओं के प्रस्तुतीकरण में कथोपकथन शैली के व्याकरण के चिह्न, कई स्थानों पर न लगा होना खटकता है। संग्रह की लघु कथाएँ चौकाती नहीं हैं बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी में जो कुछ घटित हो रहा है उसकी याद दिलाती हैं। एक और खास बात यह है कि कई लघुकथाओं में नायक के रूपक को मानवीकृत करके प्रस्तुत करना एक सुखद एहसास देता है। जैसे: लघु कथा गुब्बारा, भ्रष्टाचार, कुर्सी, चूल्हे की लकड़ी और ठूठ आदि। विश्वास है हिंदी के पाठकों के साथ-साथ उर्दू, अंग्रेजी और रूसी भाषा के पाठकों को भी इन लघुकथाओं के अंतस से गुजरने में एक सुखद एहसास होगा और इस संग्रह का स्वागत लघु कथा की दुनिया में उत्साह से किया जाएगा।

-समीक्षक : मनोज अबोध
-प्रस्तुति : अरविंद पथिक

हिंदी की पुकार



डॉ. सुभाषिनी लता
मॉरीशस

आओ चलें,
निज भाषा की ओर
जिससे है पहचान हमारी
हिंदी हमारी मातृभाषा
जहाँ है ज्ञान का भंडार
भाषा है संस्कृति का आधार,
सीख लो जब संस्कार
होंगे संगठित तब परिवार,
बनेंगे घर-आँगन स्वर्ग समान,
मिलेगा सबको प्यार आपार।
बनेगी वसुधा एक कुटुम्ब,
बहेगी प्रेम गंगा की धारा
जो चाहते हो जीवन कल्याण,
करो हिंदी में संवाद
करो हिंदी से प्यार
करो हिंदी का माना।

साक्षात्कार

शतम वर्षाणि जीवेत, के साहित्यकार डॉ. राम दर्श मिश्र से साक्षात्कार

मैं गाँव का हूँ और गाँव ने मुझे जो सादगी-संतोष और स्नेह दिया है, उसी के साथ अपनी जीवन यात्रा करता रहा हूँ।

-डॉ. रामदर्श मिश्र



साहित्यकार डॉ. रामदर्श मिश्र के साथ अलका सिन्हा की बातचीत के अंश)

(सदी के महान साहित्यकार डॉ. रामदर्श मिश्र के साथ अलका सिन्हा की बातचीत के अंश)

डॉ. रामदर्श मिश्र अपनी उम्र का ही नहीं, किताबों का भी शतक पूरा कर चुके हैं। 15 अगस्त, 2024 को वे अपनी उम्र के नए शताब्दी वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं। यह बहुत ही सुखद संयोग है कि डॉ. मिश्र उम्र के इस दौर में भी पूरी तरह से सक्रिय और रचनाशील हैं। वे जीवन के उल्लास को जीते हैं, ठहाका लगाकर हँसते हैं और कोई उदास हो तो उसे मायूसी से बाहर निकालने की प्रेरणा बनते हैं। लंबे अरसे से उनके कृतित्व और व्यक्तित्व से प्रभावित रही हूँ, इसलिए उनसे बात करना किसी सत्संग सा मालूम पड़ता है। बस, इसी क्रम में मैं अपना कंप्यूटर खोल कर उनसे हुए संवाद टाइप करने लगी तो वे हँस पड़े, “मैं इन उपकरणों का उपयोग नहीं कर पाता।”

आप तो सरकंडे की कलम से लिखते हैं डॉक्टर साहब, जो सच और सही लिखती है। मैंने हँस कर उनकी कविता की पंक्तियाँ दोहरा दीं।

“वास्तव में सरकंडे की कलम या सोने की कलम एक प्रतीक है।” उन्होंने कहा, “हमारे समय में सरकंडा या नरकट से कलम बनती थी और मेरे बचपन के समय यही उपलब्ध थी। लेकिन मेरी कविता में यह जनसामान्य के जीवन और संघर्ष का प्रतीक है, जबकि सोने की कलम उन रचनाकारों की तरफ इशारा करती है जो अभिजात वर्ग से आते हैं और निरंतर अभिजात वर्ग के संबंध में ही लिखते हैं।

कविता अपने और समाज के दर्द से उत्पन्न होती है। जब व्यक्ति के मन में समाज की बेचैनियाँ आंदोलित होती हैं तब वास्तव में कविता कविता होती है।

चाहता हूँ कुछ लिखूँ, पर कुछ निकलता ही नहीं है

दोस्त भीतर आपके कोई विकलता ही नहीं है।”

वे अपना गीत गुनगुनाने लगे।

उनकी सहजता उनके व्यक्तित्व का बहुत बड़ा गुण है। वे खुलकर बोलते हैं, मस्ती में हँसते हैं... मैं पूछे बिना न रह सकी, आजकल किसी को ठहाके लगाकर हँसते हुए कहाँ देखते हैं। लोग खुश होने के लिए कितने ही जतन करते हैं, पैसे खर्चते हैं, दुनिया घूमते हैं मगर खुश फिर भी नहीं होते और एक आप हैं कि अपनी मस्ती में हँसते-गाते रहते हैं। सुहाना मौसम देख कर खुश हो जाते हैं। ऐसा कैसे संभव है?

“देखिए, यह तो अपना-अपना संस्कार है, स्वभाव है। कुछ लोग महत्वाकांक्षी स्वभाव के होते हैं और भाँति-भाँति की उपलब्धियों के लिए दौड़-धूप मचाए रहते हैं। जाहिर है, ऐसे लोगों के साथ आपको बैठक की सहजता अनुभव नहीं होगी। मैं गाँव का हूँ और गाँव ने मुझे जो सादगी-संतोष और स्नेह दिया है, मैं उसी के साथ अपनी जीवन यात्रा करता रहा हूँ। मुझे इस बात का हर्ष है कि मैं अपनी सादगी और सहजता के कारण अनेक लोगों का प्यार पाता रहा, उन्हें प्यार देता रहा। लोगों से मिलना-जुलना भाता है मुझे।”

गाँव का संस्कार मिश्र जी की संजीवनी है। हर किसी के दुख-सुख में खड़ा रहना। छल-प्रपंच से दूर और मस्त जीवन जीना... उनका मन दिल्ली जैसे महानगर में जीवन का लंबा समय जीने के बाद भी महानगर उनके मन में उस तरह की पैठ नहीं बना पाया। फिर भी, गुजरात से बहुत लगाव रहा उनका। मेरी जिज्ञासा पर गुजरात का जिक्र छिड़ गया। फिर तो संवाद में एक नया ही रंग आ मिला...

“गुजरात मुझे अपना दूसरा घर प्रतीत होता है। वहाँ मैं आठ वर्ष रहा लेकिन मनुष्यता की अनेक छवियाँ वहाँ मैंने देखीं। उन्होंने मेरी सादगी को बहुत महत्व दिया। मेरे मित्रों, मेरे सहकर्मियों ने सदा इस बात का मान किया कि इस व्यक्ति में कोई छल-कपट, उखाड़-पछाड़ नहीं हैं बल्कि यह एक स्नेह भरा सीधा-सादा आदमी है। जब सेंट जेवियर्स कॉलेज, अहमदाबाद ने मुझे अपने यहाँ से जाने का संकेत दे दिया तब अपने प्रति उनके लगाव की मैंने एक नई छवि देखी। कॉलेज ने मेरा वेतन आधा कर दिया तो मुझे 600 रुपये के स्थान पर 300 रुपये मिले लेकिन जब मुझे यह मालूम हुआ कि वहाँ के सारे सहकर्मी चुपचाप प्रिंसिपल के पास गए और अनुरोध किया कि इनका वेतन कम मत कीजिए, हमारे वेतन में से थोड़ा-थोड़ा काट लीजिए तो मैं दंग रह गया। सहकर्मियों का इतना स्नेह कहाँ दिखाई पड़ता है!

गुजरात की और भी कई घटनाएँ मुझे याद आ रही हैं।

... मेरी आँख में सफेदी बढ़ रही थी। आँख के एक डॉक्टर के पास गया। डॉक्टर ने मेरी आँख का ऑपरेशन बताया। मैंने खर्च के बारे में जानना चाहा तो उन्होंने मुझसे पूछा -- आप क्या करते हैं। मैंने बताया कि मैं सेंट जेवियर्स कॉलेज में पढ़ाता हूँ। इस पर उन्होंने मुझे अगले सप्ताह की तारीख पर बुलाकर ऑपरेशन कर दिया और कुछ दवाएँ भी दीं। मैंने पूछा -- क्या (फीस) दे दूँ?

उन्होंने कहा -- ‘अरे कुछ नहीं। मैं तेरा डॉक्टर, तू मेरा डॉक्टर’। मेरे लाख कहने पर भी उन्होंने पैसा नहीं लिया। डॉक्टर ने बताया कि उनकी बेटी सेंट जेवियर्स कॉलेज से पढ़ी है, पैसा कैसे ले सकते हैं।

वहाँ की दुनिया ही और थी...”

मैं देख रही थी और सोच रही थी कि कंकरीट के जंगल और रोबोट के महानगर -- दिल्ली में आखिर मिश्र जी का दिल लगता भी तो कैसे! खैर, मैंने बातों का सिलसिला आगे बढ़ाया। यह तकनीक का युग है। लोग घर बैठे देश-विदेश के लोगों से मुलाकात कर लेते हैं। कहीं जाने की जरूरत नहीं। ऑनलाइन गोष्ठियाँ भी हो रही हैं और संप्रेषण के अनेक माध्यम आ गए हैं। इस बदलाव को आप कैसे देखते हैं?

“दरअसल पहले ये सुविधाएँ नहीं थीं जो आज हैं, इसलिए तब हर शहर में साहित्यकारों का संगठन होता था, गोष्ठियाँ होती थीं और चर्चा के लिए लोगों की आवाजाही बनी रहती थी। तुमने सही कहा, आज संप्रेषण की अनेक सुविधाएँ हो गई हैं। अब उन गोष्ठियों की कमी खलती है जिनमें अनेक लोग बैठकर एकसाथ अपनी बात कहें, दूसरे को सुनें, अपने विचार व्यक्त करें। अब तो ऑनलाइन की सुविधा हो गई है, दूर-दूर के लोग आपस में बात कर लेते हैं और रचनाओं का संप्रेषण भी कर लेते हैं। मगर सबसे अजीब बात ये हुई है कि लोग फेसबुक के माध्यम से अपनी कविताएँ प्रेषित करते रहते हैं और स्वयं ही अपनी प्रशंसा भी करते रहते हैं। सामान्य से कवि फेसबुक में उतरा गए हैं और कविता का स्तर गिरता जा रहा है। जो वास्तव में बड़े कवि हैं, वे स्वयं अपने बारे में बात नहीं करते। वे चाहते हैं कि उनकी रचनाओं पर अन्य लोग विचार करें।”

‘बनाया है मैंने ये घर धीरे-धीरे’ आपकी पहचान की गजल है। आपके जीवन-दर्शन को समझना हो तो यह अकेली गजल काफी है। इसकी रचना प्रक्रिया के बारे में थोड़ा बताइए। यह भी बताइए कि आजकल जो हर कोई रातोंरात मशहूर हो जाना चाहता है उन्हें कैसे खुद को समझाना चाहिए?

“मेरी तमाम गजलों, कविताओं और साहित्य में मेरी जिंदगी की कथाएँ चुपके-चुपके व्याप्त हैं। मैं ऐसा सोच कर नहीं लिखता हूँ कि मुझे यह लिखना चाहिए। लिखना मेरा एक स्वभाव बन गया है और अनुभूत यथार्थ के आयाम सहज भाव से मेरी रचनाओं में उतरते रहते हैं। अब कौन गजल बड़ी बन जाएगी, कौन-सी कथा या उपन्यास बड़े बन जाएंगे, यह तो मन में होता नहीं है। जब मैंने ये गजल लिखी तब ये थोड़े ही सोचा था कि यह इतनी लोकप्रिय हो जाएगी। मेरी और भी अनेक गजलें हैं जो इसके समान ही हैं लेकिन यह लोगों की चर्चा में आ गई तो आ गई...” और उनके मुख पर कोई बच्चा-सा हँसने लगा। फिर गंभीर होते हुए उन्होंने आगे कहा, “कई बार जब किसी रचनाकार की कोई रचना बड़ी बन जाती है तब लोग बार-बार उसी को सुनना चाहते हैं और उसकी अन्य रचनाओं के प्रति लोगों में उदासीनता दिखाई पड़ने लगती है। ‘मैला आँचल’ के बाद रेणु के कई उपन्यास आए लेकिन चर्चा में ‘मैला आँचल’ ही रहा। ‘राग दरबारी’ के बाद भी कई उपन्यास आए लेकिन लोगों के जहन में ‘राग दरबारी’ की जगह दूसरा उपन्यास न ले सका। तो कई बार किसी किसी रचना की लोकप्रियता उसकी अन्य रचनाओं को चुप्पी में डाल देती है।”

मिश्र जी ने जीवन के अनेक उतार-चढ़ाव का सामना किया है मगर न तो कभी उपलब्धियों को सर पर हावी होने दिया, न ही कुछ खो जाने के अवसाद में डूबने दिया। वे निरंतर लिखते रहे। जीवन की खुरदराहट को शब्दों में बुनते रहे। मैंने बात जारी रखी -- क्या आपको नहीं लगता कि जीवन की विषमताएँ लेखन के लिए उर्वरा जमीन का काम करती हैं? सुविधाओं से अधिक चुनौतियाँ होती हैं जो व्यक्ति को गढ़ती हैं?

“मैं अक्सर नए रचनाकारों से यह बात कहता हूँ कि बने बनाए रास्तों पर चलने के बदले अपना रास्ता गढ़ो। भले ही बना-बनाया रास्ता चिकना होता है, हरा-भरा होता है, लुभाता है मगर उसमें फिसलने का डर होता है। तुम्हें अपना मार्ग खुद बनाना चाहिए। भले ही यह कठिन होता है लेकिन वही असली होता है। उसको बनाने में तुम्हें कष्ट होगा, श्रम लगेगा लेकिन जब वह मार्ग बन जाएगा तब वह तुम्हारा अपना मार्ग कहलाएगा। तब तुम्हारी रचनाओं की अपनी पहचान होगी और यही तुम्हें बड़ा बनाएगी। अपनी एक कविता सुनाता हूँ --

ये रास्ता चिकना था, हरा-भरा था

लेकिन अपना नहीं था

इसलिए जब-जब इस पर पाँव रखा

फिसल कर गिर पड़ा

अपना रास्ता तो बीहड़ है, सुनसान है,

सपाट है, हैरान करता है लेकिन गिराता नहीं,

खड़ा करता है,

बाहर-बाहर माँजता है

भीतर-भीतर बड़ा करता है।”

मैं देख रही थी कि सदी के साहित्यकार का हर शब्द जीवन को नई और अनूठी ऊर्जा से भर रहा है...

वैश्विक हिंदी परिवार की ओर से उन्हें 100वीं जन्मदिन की शत्-शत् बधाई और अभिनंदन।

-साक्षात्कार कवियित्री अलका सिन्हा द्वारा

संरक्षक

अनिल शर्मा ‘जोशी’

संपादक

डॉ. जयशंकर यादव

संपादन सहयोग

प्रो. स्वाति श्वेता, डॉ. अरविंद पथिक

तकनीकी सहयोग

डॉ. नवीन नीरज

मुद्रक : आनंद प्रिंटर,

नई दिल्ली -110055

प्रतिक्रिया और सुझावों के लिए

ई मेल: vhpatrika@gmail.com, फोन : +91 9448635109